भारत में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन

19वीं शताब्दी में भारत में हुए सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन औपनिवेशिक काल में राष्ट्रीय जागरण के प्रारम्भिक बिन्दू थे। इसे भारतीय नवजागरण का काल भी कहा जाता है। इन आंदोलनों ने भारत में राष्ट्रवाद के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। **बिपिन चन्द्रा** ने इन आंदोलनों के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा है कि **भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन भारतीय पुनर्जागरण का हि एक हिस्सा था जो भारत में एक सामान्य सुधार आंदोलन के रूप में प्रकट हुआ और भारत की राजनीतक मुक्ति का आंदोलन का रूप लेने से पहले इसने व्यापक सामाजिक और धार्मिक सुधारों का सूत्रपात किया।** राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द सरस्वती, एनी बेसेंट तथा ज्योतिबा फूले आदी ये सभी समाज सुधारक सही अर्थों में देशभक्त थे। इन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ जंग छेड़ी और भारतीयों को अपनी प्राचीन गौरवशाली अतीत से परिचित कराकर भारतीयों को उसपर गर्व करने की प्रेरणा दी।

19वीं शताब्दी को भारतीय समाज के लिए एक क्रांतिकारी समय कहा जा सकता है। यह भारतीय राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक सभी क्षेत्रों में बुनियादी बदलाव का साक्षी था। सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में वर्षो पुरानी मान्यताओं और परम्पराओं को चुनौती दी गई। सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, जाति प्रथा तथा कन्या शिशु हत्या जैसी सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए आंदोलन चलाए गए तथा स्त्री शिक्षा और विधवा पुर्नविवाह को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जागरूकता अभियान चलाए गए। इन आंदोलनों में भारत के शिक्षित, अंग्रजी पढ़े लिखे वर्ग ने बढ चढकर हिस्सा लिया। वास्तव में भारतीय समाज में अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार प्रसार ने परिवर्तनकारी भूमिका निभाई। आधुनिक शिक्षा प्राप्त बुद्धजीवीयों में यह चेतना फैली कि भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक संरचना में मौजूद कुरीतियों को दूर किए बिना भारतीय तथाकथित अंग्रेजी श्रेष्ठता और अहंकार के प्रभाव से खुद को मुक्त नहीं कर सकते। परिणाम स्वरूप अनेक सामाज और धर्म सुधार आंदोलन चलाए गए, जिनमें कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं :–

1.ब्रह्म समाज :–भारत में समाज सुधार आंदोलनों के अगुआ राजा राममोहन राय ने 1828 में इस संगठन की स्थापना कलकत्ता में की थी। यह संगठन हिन्दू समाज में व्याप्क स्तर पर व्याप्त सामाजिक कुरितियों जैसे सती प्रथा, बहुविवाह, पर्दा प्रथा, बाल विवाह, जातिय उत्पीड़न, आदी पर रोक लगाने और मूर्तिपूजा, बहुदेववाद, धार्मिक अनुष्ठान और धार्मिक अंधविश्वास जैसी स्थापित अनावश्यक अवधारणाओं के विरूद्ध आंदोलन चला रहा था। यह संगठन महिलाओं के अधिकारों का पक्षधर था और उनकी स्थिति में सुधार के लिए स्त्री शिक्षा और विधवा पुर्नविवाह जैसे अभियानों का नेतृत्व कर रहा था। राजा राम मोहन राय की यह व्यक्तिगत उपलब्धि रही थी की उन्होंने ब्रिटिश सरकार पर दबाव डालकर लार्ड विलियम बैंटिक के द्वारा सती प्रथा के उन्मूलन संबंधी कानून 1929 में बनवाया था।

2. आर्य समाज :– 19वीं सदी में स्थापित संगठनों में आर्य समाज दूसरा प्रमुख संगठन था। इसकी प्रकृति पुनरुत्थानवादी थी। इसकी स्थापना 1875 में **स्वामी दयानंद सरस्वती** द्वारा की गई थी। ये एक धर्म सुधारक

थे जिन्होंने मूर्तिपूजा, बहुदेवाद, धार्मिक अनुष्ठानों, पुरोहितवाद, जीव हत्या, बाल विवाह आदी का विरोध किया और वेदों के उदाहरणों द्वारा इनकी सत्यता को भारतीयों के सामने रखने की कोशिश की। इन्होंने भारतीयों को **वेदों की ओर लौटो** का नारा दिया। इन्होंने ही स्वराज शब्द का प्रयोग सबसे पहले किया और हिन्दी भाषा को देशी भाषा तथा अंग्रेजी को विदेशी कहकर इसका विरोध किया। इनके शिक्षा के प्रभावस्वरूप कई आर्य समाजी कांग्रेस के सदस्य बने और अपने क्रांतिकारी विचारों से कांग्रेस की छवि को बदल दिया।

3. थियोसोफिकल सोसायटी :– यह संगठन मुख्य रूप से **एनी बेसेंट** के कारण जाना जाता है। लेकिन इसकी स्थापना मैडम ब्लावस्तस्की और कर्नल आल्कट ने न्यूयार्क में 1875 में कि थी। यह संगठन भी भारत में समाज सुधार से संबंधित था। इसने प्राचीन हिन्दु, बौद्ध और पारसीयन दर्शन का प्रचार प्रसार किया और उपनिषदों तथा वेदों में व्याप्त वैश्विक भाईचारे के संदेश को लोंगों तक पहुचांया। यह संगठन भी भारतीय समाज में व्याप्त अंधविश्वासों को दूर करने के प्रति प्रतिबद्ध था।

4. रामकृष्ण मिशन :– इस संगठन की स्थापना 1892 में स्वामी विवेकानन्द के द्वारा कलकत्ता के निकट बेलूर में की गई थी। अपने गुरू राम कृष्ण परमहंस की शिक्षा से प्रभावित विवेकानन्द ने अपने संदेशों से भारतीय युवकों में नई चेतना का संचार किया। उन्होंने भारत के गौरवशाली इतिहास का विश्व के सामने बखान करने के लिए वेदों का अनुसरण किया। वो सभी भारतीयों को एक दूसरे से प्रेम करने का संदेश देते थे। जाति प्रथा और छुआछुत का विरोध इनके शिक्षाओं में मुख्य था। ये सर्वधर्म सम्भाव के सिद्धांत में विश्वास करते थे।

5. सत्यशोधक समाज :– इस संगठन की स्थापना 24 सितम्बर 1873 को ज्**योतिराव गोविंदराव फूले** के द्वारा कि गई थी। इन्होंने मुख्य रूप से मूर्ति पूजा और जाति प्रथा के विरूद्ध आंदोलन चलाया। ये **पुरोहितवाद** के विरोधी थे तथा समाज में तार्किक विचारधारा के प्रवाह के समर्थक थे। स्त्री शिक्षा के संदर्भ में भी इन्होंने उल्लेखनीय काम किए। अपनी पत्नी सावित्रीबाई फूले को शिक्षित करके इन्होंने अपने समाज में एक मिसाल कायम की थी। इन्होंने विधवा पुर्नविवाह के लिए भी आंदोलन संगठित किया। समाज के पिछड़े हुए, अछुत वर्ग के लिए इन्होंने ही **दलित** शब्द का प्रयोग किया था। ये एक क्रांतिकारी थे जो समाज में क्रांतिकारी विचारों के प्रर्वतक थे।

6. यंग बंगाल आंदोलन :– यह संगठन एक स्कॉटलैण्ड के नवयुवक हेनरी **लुइस डिजा**रीयो के द्वारा कलकत्ता में 1920 में स्थापित किया गया था। डिजारीयो पेशे से एक शिक्षक थे जिन्होंने अपने विद्यार्थियों को साहित्य, दर्शन, इतिहास और विज्ञान के अध्यापन द्वारा वैज्ञानिक सोंच के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों के प्रति लोंगों को अपनी तार्किक सोंच और तर्कशीलता से जागरूक करने का काम किया। अन्य समाज सुधारकों की तरह उन्होंने भी हिन्दू समाज की रूढीवादी सोंच का विरोध किया। एक शिक्षक होने के नाते उन्होंने अपने विद्यार्थियों को स्वतंत्र चिंतन के लिए प्रोत्साहित किया और फ्रांसीसी क्रांति के सार तत्व स्वतंत्रता और समानता के तत्वों से लोंगों को परिचित कराया।

7. अलीगढ़ आंदोलन :– यह आंदोलन सर सैयद अहमद खान के द्वारा 1860 में अलीगढ़ में शुरू किया गया। इसका उद्देश्य मुस्लिम समुदाय में वैज्ञानिक सोंच को बढ़ावा देने के लिए पश्चिमी शिक्षा का प्रचार प्रसार करना था तथा समुदाय को धार्मिक रूढ़िता के प्रति जागरूक करना था। उनका विश्वास था कि मुस्लिमों के धार्मिक और सामाजिक जीवन में सुधार केवल पश्चिमी शिक्षा के प्रभाव में ही हो सकता है। 1875 में इन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की स्थापना मुस्लिम समुदाय में शिक्षा के प्रचार प्रसार के उद्देश्य से किया।

8. देवबंद आंदोलन :– इसकी शुरूआत 1867 में उत्तर प्रदेश के देवबंद में मुहम्मद कासिम नानावतावी और राशिद अहमद गांगोही के द्वारा किया गया था। यह एक ब्रिटिश विरोधी आंदोलन था जो अंग्रेजी शिक्षा का विरोध करता था। इसका मुख्य उद्देश्य भी शिक्षा के माध्यम से मुस्लिमों के जीवन में सुधार करना था।

9. प्रार्थना समाज :– प्रार्थना समाज की स्थापना 1876 में तत्कालीन बांबे में आत्माराम पांडुंग के द्वारा समाज सुधार और प्रार्थनाओं में तार्किकताओं के समावेश के उद्देश्य से किया गया था। इसके दो प्रमुख सदस्यों आर. सी. भण्डारकर और महादेव गोविंद रानाडे ने संगठन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उल्लेखनीय कार्य किए। इन्होंने अंतरजातीय शादीयों की वकालत की, विधवा पुर्नविवाह को बढावा देने का प्रयास किया तथा महिलाओं और शोषित वर्ग के उत्थान के लिए कार्य किया। गोविंद रानाडे ने विडॉव रिमेरिज एसोसिएशन और डेक्कन एडुकेशन सोसायटी की स्थापना समाज सुधार के लिए की थी। रानाडे का मानना था **कि धर्म सुधार ही समाज सुधारों का मार्ग प्रशस्त करती है। अगर धार्मिक मान्यताओं में सुधार नहीं होते हैं तो सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में सुधार में सफलता नहीं मिल सकती।**

सुधार आंदोलनों का प्रभाव –

ब्रिटिश भारत के रूढीवादी उच्च वर्ग को नाराज नहीं करना चाहते थे, विशेषकर 1857 के विरोध के बाद जिसमें धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप को भी एक कारण माना गया था। जिस कारण सुधार संबंधी कानूनों की संख्या कम रही। महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए कुछ कानूनों का निर्माण जरूर हुआ। जैसे, सत्ती प्रथा को 1829 में एक कानून द्वारा गैर कानूनी घोषित किया गया। 1856 विधवा पुर्नविवाह को एक कानून द्वारा मंजूरी मिली।बालिका शिशु हत्या को गैर कानूनी घोषित किया गया तथा 1860 में एक कानून द्वारा लड़कियों की शादी की उम्रको बढ़ाकर 10 वर्ष कर दिया गया।

1872 में अंतरजातीय और अंतरधार्मिक विवाहों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक कानून पारित हुआ। बाल विवाह को रोकने के उद्देश्य से एक कानून 1891 में पारित हुआ, जिसके बाद ही लड़कियों का शादी कि उम्र 10 वर्ष निर्धारित की गई। इन कानूनों के अलावा भी कई सारे सुधार कार्यक्रम पूरे स्वतंत्रता आंदोलन काल में स्वाधीनता ओदोलन के साथ साथ चलते रहे। इन सुधारों का एक महत्वपूर्ण परिणाम 20वीं सदी में देखने को मिला, जब स्वतंत्रता संग्राम में पढ़ी लिखी महिलाओं के साथ साथ घरेलू महिलाओं ने भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

भीम राव अम्बेडकर जैसे व्यक्तित्व का भारतीय राजनीतिक पटल पर उदय इन सुधास आंदोलनों का ही प्रभाव था। इन आंदोलनों के उद्देश्यों और लक्ष्यों का प्रभाव हमारे संविधान पर भी स्पष्ट दिखई पड़ता है।